पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शनों में अन्तर

भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही दर्शनों में जीवन एवं जगत् की वास्तविकता को समझने का प्रयास किया जाता है। दोनों ही जीवन से संबद्ध हैं। फिर भी दोनों में निम्नलिखित अंतर देखने को मिलता है। जैसे कि –

(1) उत्पत्ति को लेकर अंतर :→ पाश्चात्य दर्शन की उत्पत्ति बौद्धिक जिज्ञासा से होती है, किंतु भारतीय दर्शन की उत्पत्ति दुःखों को दूर करने की आकांक्षा से हुयी। पाश्चात्य दार्शनिक जिज्ञासावश आत्मा, ईश्वर और विश्व सम्बंधी विषयों का विवेचन करता है। इसके विपरित भारतीय दार्शनिक विश्वव्यापी कष्टों और बुराईयों को देखकर एक प्रकार का मानसिक असंतोष अनुभव करता है और इन्हें दूर करने के लिए दार्शनिक चिंतन का आरंभ करता है।

(2) पाश्चात्य दर्शन सैद्धांतिक है, किंतु भारतीय दर्शन व्यावहारिक :→ पश्चिम में दर्शन को मानसिक व्यायाम समझा जाता है। इसका लक्ष्य तत्वज्ञान की प्राप्ति है। इसके विपरित, भारतीय दर्शन का लक्ष्य केवल तत्वज्ञान की प्राप्ति नहीं, बल्कि दुःखों एवं बंधनों से मुक्त कराकर मोक्ष दिलाना है। यहाँ दर्शन जीवन की समस्यायों के समाधान में सदैव लगा रहता है।

(3) पाश्चात्य दर्शन का दृष्टिकोण वैज्ञानिक है, किंतु भारतीय दर्शन का धार्मिक :→ पाश्चात्य विचारक परम तत्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक पद्धतियाँ अपनाते हैं। वे आलोच्य विषय को अपने सुविधानुसार परिवर्तित करते रहते हैं। ऐसा करना वैज्ञानिक प्रयोग के द्वारा ही संभव है। जबकि दूसरी ओर भारतीय दर्शन धर्ममूलक है। इस परम्परा में व्यक्ति स्वयं को इस प्रकार बना लेता है, कि वह परमतत्व का साक्षात्कार करने में सफल हो सके। इस कार्य के लिए वह योग, जप, तप तथा साधना

का सहारा लेता है। इन साधनों से उसे दिव्यदृष्टि मिलती है और तब वह परमतत्व का साक्षात्कार (दर्शन) कर पाता है। यह उसका धार्मिक दृष्टिकोण है। पाश्चात्य परंपरा में दर्शन एवं धर्म दोनों विरोधी माने गये हैं, किंतु भारतीय परंपरा में इन दोनों (धर्म-दर्शन) में अन्योन्याश्रय संबंध है।

(4). पाश्चात्य दर्शन में बौद्धिक ज्ञान की प्रधानता है, किंतु भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक ज्ञान की है :→ प्राय: सभी पाश्चात्य विचारक बुद्धि (Reason or Intellect) को परमतत्व का ज्ञान प्राप्त कराने में समर्थ मानते हैं। सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, स्पिनोजा, लाइबनीज, हीगेल, (काण्ट) आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। ये बुद्धिवादी विचारक बुद्धि को ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन मानते हैं। दूसरी तरफ भारतीय दार्शनिक बुद्धि को परमतत्व का ज्ञान दिलाने में असमर्थ पाते हैं; क्योंकि बुद्धि की शक्ति सीमित है। इससे केवल आंशिक ज्ञान मिल सकता है। आध्यात्मिक अनुभूति ही मात्र हमें परमतत्व का साक्षात्कार कराने में समर्थ है। बौद्धिक स्तर पर ज्ञाता और ज्ञेय के बीच अंतर बना रहता है, किंतु आध्यात्मिक स्तर पर यह भेद नहीं रहता। बौद्धिक ज्ञान संदेहात्मक एवं अपूर्ण होता है; किंतु आध्यात्मिक ज्ञान संदेहरहित, निश्चित एवं पूर्ण माना जाता है। कुछ आधुनिक विचारक भी बुद्धि की अपेक्षा आध्यात्मिक अनुभूति को प्रमुखता देते हैं। इस प्रसंग में ब्रैडले, बर्गसाँ आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(5). पाश्चात्य दर्शन विश्लेषणात्मक है, किंतु भारतीय दर्शन संश्लेषणात्मक :→ बुद्धि किसी विषय को खण्डों में बाँटकर उसका अध्ययन करती है, यही विश्लेषणात्मक विधि है। पाश्चात्य विचारक दर्शन को तत्वविज्ञान (Metaphysics), नीतिशास्त्र (Ethics), प्रमाणविज्ञान/ज्ञानमीमांसा (Epistemology), ईश्वर-

विज्ञान (Theology), सौंदर्यविज्ञान (Aesthetics) तर्कविज्ञान (Logic), विश्वविज्ञान (cosmology) विज्ञान दर्शन (Philosophy of Science), आदि विभिन्न शाखाओं में विभक्त करके अध्ययन करते हैं। इसके विपरीत भारतीय दर्शन में इनका कृत्रिम विभाजन नहीं होता। क्योंकि भारतीय विचारक तत्व, नीति, ईश्वर आदि सभी समस्याओं का एक साथ अध्ययन करते हैं। यह भारतीय दर्शन का समन्वयवादी दृष्टिकोण है।

(6) पाश्चात्य दर्शन में इहलोक और वर्तमान काल पर विशेष जोर दिया जाता है, जबकि भारतीय दर्शन भूत, वर्तमान एवं भविष्य पर बल देता है :→ प्लेटो आदि कुछ विचारकों को छोड़कर प्रायः सभी पाश्चात्य दार्शनिक इस दुनिया और वर्तमान काल तक ही अपना अध्ययन सीमित रखते हैं, जबकि भारतीय दार्शनिक इस लोक के अतिरिक्त स्वर्ग, नरक, भूत, भविष्य एवं वर्तमान का भी अध्ययन करना परम कर्तव्य समझते हैं।

(7) कभी-कभी पाश्चात्य दर्शन को आशावादी और भारतीय दर्शन को निराशावादी कहा जाता है :→ निराशावाद मन की एक ऐसी वृत्ति है, जो जीवन को विषाद-मय समझती है। इसी प्रकार आशावाद मन की वह प्रवृत्ति है, जो जीवन को आनंदमय समझती है। भारतीय दर्शन में दुःखों का विशद वर्णन देखकर कुछ लोग इसे निराशावादी कहते हैं, परन्तु ऐसा विचार भारतीय दर्शन के अपूर्ण ज्ञान का परिचायक है। यहाँ पर अवश्य आरंभ दुःख रूपी निराशावाद से होता है, किंतु इसका अंत सदैव आशावाद में होता है। इसी प्रकार से पाश्चात्य दर्शन में भी शॉपेनहॉवर, हार्टमैन आदि कई निराशावादी विचारक भी हुए हैं। अतः यह कहना सर्वथा अनुचित है कि एक आशावादी है तो दूसरा निराशावादी।

(8) कर्म और आचरण के संबंध में पाश्चात्य दर्शन सामाजिक संगठन को प्रमुख मानता है, किंतु भारतीय दर्शन सामाजिक संगठन को गौण मानता है :→ पाश्चात्य दर्शन विज्ञान

से अधिक प्रभावित होने के कारण सामाजिक संगठन को प्रधानता देता है। वहीं दूसरी तरफ भारतीय दर्शन आध्यात्मिक होने एवं आत्मविकास के लिए गुरु के आदेश और व्यक्ति के अपने प्रयत्न को आवश्यक मानता है। समाज पर कम ध्यान देने के कारण भारतीय दर्शन को कभी-कभी पलायनवादी भी कहा जाता है, किंतु यह आक्षेप निराधार है।

इस प्रकार से, उपर्युक्त अंतरों को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि, पाश्चात्य और भारतीय दर्शन में केवल मौलिक विरोध है और इनका परस्पर मिलन संभव नहीं है। फिर भी इनके बावजूद राधाकृष्णन, मूर आदि कुछ आधुनिक विचारक पूर्व और पश्चिम का भेद मिटाकर एक विश्वदर्शन की स्थापना में लगे रहे। आज भौतिकवादी पाश्चात्य दार्शनिक और आध्यात्मवादी भारतीय विचारक परस्पर एक हो रहे हैं। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि कुछ बाह्य अंतरों के रहने पर भी इन दोनों दर्शनों में कोई अंतर्निहित विरोध नहीं है। ये एक-दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं।